दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

: 0551-2334549
: 9792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांकः 16.09.2020

प्रकाशनार्थ

ओजोन क्षरण हमारे अस्तित्व के लिए गंभी खतरा – डॉ.डी.के.सिंह

16 सितम्बर, गोरखपुर। पृथ्वी की सतह 10 से 50 किलोमीटर की ऊंचाई पर समताप मंडल है इसी मंडल में ओजोन परत पाई जाती है। ऑक्सीजन के तीन अणुओं के मिलने से ओजोन गैस का निर्माण होता है जिससे ओजोन परत बनती है। यह परत सूर्य से आने वाले हानिकारक रेडियोएक्टिव किरणों को रोकती है। इसके क्षरण पर विमर्श 1971 में शुरू हुआ तथा मॉन्ट्रियल समझौता (1987) में इस ओर सभी वैज्ञानिकों का ध्यान आकृष्ट किया। मॉन्ट्रियल समझौते में यह निष्कर्ष आया कि ओजोन क्षरण से यूवी–रेडिएशन होता है, जिससे मनुष्यों में कैंसर, स्किन कैंसर जैसी बीमारियां उत्पन्न होती हैं, इसका प्रभाव स्थलीय जीवों पर ही नहीं बल्कि समुद्री जीवों पर भी बहुत अधिक पड़ता है। यद्यपि कि ओजोन क्षरण पर्मियन काल में भी हुआ था किंतु यह क्षरण प्राकृतिक रूप से हुआ था। इसलिए प्राकृतिक रूप से पुनः स्थापित भी हो गया। वर्तमान में यदि ओजोन क्षरण करने वाली क्लोरोफ्लोरो, कार्बन आदि गैसों का उत्सर्जन नहीं रोका गया तो बिना किसी जलवायु परिवर्तन के ही पृथ्वी का जीवन नष्ट हो जाएगा, इसलिए ओजोने को बचाया जाना चाहिए। इस कोरोना काल में मनुष्य तो परेशान हुआ है किंतु प्रकृति ने अपने ओजोन परत को निश्चित रूप से एक व्यवस्थित रूप दिया है। ओजोन क्षरण को बचाए रखने के लिए ऐसे उत्पादों का प्रयोग कम करना होगा जिससे क्लोरो–फ्लोरो कार्बन का उत्सर्जन होता है, प्लास्टिक या टायरों को जलाने से बचना होगा, सुपरसोनिक विमानों में प्रयुक्त ईंधन से भी ओजोन क्षरण होता है इसे रोकना होगा। पृथ्वी पर अधिक से अधिक पेड़–पौधों को लगाना होगा, भौतिकवादिता को छोड़कर पर्यावरण मित्र के रूप में जीवन यापन करना होगा।

उक्त बातें ओजोन दिवस के अवसर पर आज दिनांक 16 सितंबर 2020 को महाविद्यालय के द्वारा ऑनलाइन व्याख्यानमाला के अंतर्गत जीव विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर के पूर्व अध्यक्ष प्रो.डी.के. सिंह ने कहीं।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ शैलेंद्र प्रताप सिंह ने किया। उन्होंने कहा कि ओजोन क्षरण को रोकने के लिए सभी लोगों को जागरूक होना होगा, वृक्षारोपण करना होगा, विलासितापूर्ण जीवन के घटक जैसे एयर कंडीशनर, रेफ्रिजरेटर, शीतगृह तथा इस तरह के अन्य उपकरणों का उपयोग कम करना होगा।

कार्यक्रम का संचालन महाविद्यालय के कंप्यूटर विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ पवन कुमार पाण्डेय तथा अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन भूगोल विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ कमलेश कुमार मौर्य ने किया। इस कार्यक्रम में यूट्यूब व जूम ऐप से लोग जुड़े रहे।

उक्त अवसर पर महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान एवं भूगोल विभाग द्वारा संयुक्त रूप से ऑनलाइन क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें 140 छात्र/छात्राओं ने प्रतिभाग किया उत्तीर्ण प्रतिभागियों को प्रमाण–पत्र भी प्रदान किया गया।

डॉ.(शैलेश कुमार सिंह)
प्रभारी, सूचना एवं जनसम्पर्क